

## अष्टपाहुड

ASHTAPAAHUDA

आ. कुन्दकुन्द · २वीं शती · अभिलेख ७/९०

श्री जिनचन्द्राचार्य

→

आ. कुन्दकुन्द

→

श्री उमास्वामी (गृद्धपिच्छाचार्य)

## संक्षिप्त परिचय

आचार्य कुन्दकुन्द कृत आठ 'पाहुडों' (प्राभृत/भेंट) का संग्रह — दंसण, सुत्त, चारित्त, बोध, भाव, मोक्ख, लिंग और सील पाहुड।

संक्षिप्त गाथाओं में सम्यग्दर्शन से लेकर शील तक साधना के मर्म खोलता है।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

## अभिलेख-विवरण

अष्टपाहुड — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक ७ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता आ. कुन्दकुन्द; रचना-काल २वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक ६५) के अनुसार इनका समय १२७–१७९ है तथा गुरु श्री जिनचन्द्राचार्य। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "समयसारादि ८४ पाहुड" उल्लिखित है। इसी लेखनी से समयसार, प्रवचनसार, पंचास्तिकाय, नियमसार, बारस अणुवेक्खा भी इस सूची में सम्मिलित हैं। समकालीन ग्रन्थों में षट्खण्डागम, कसायपाहुड, मूलाचार, तत्त्वार्थसूत्र परिगणित हैं।

इसी लेखनी से

समयसार

प्रवचनसार

पंचास्तिकाय

नियमसार

बारस अणुवेक्खा

समकालीन ग्रन्थ

षट्खण्डागम

कसायपाहुड

मूलाचार

तत्त्वार्थसूत्र

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗

जैनकोश ↗

Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

← नियमसार

बारस अणुवेक्खा →

श्रुतधारा · ग्रन्थ ७/१० · स्रोत: १०-ग्रन्थ कालानुक्रमिक सूची (मुमुक्षु)